# कहानी सुनाने के प्रमुख बिंदु

- डॉ. महेंद्र सिंह

## कहानी कहने का अनोखा लहज़ा:

कहानी कहने का अपना एक विशेष लहज़ा होता है। कहानी सुनाने और पढ़कर सुनाने में बहुत अंतर होता है। पढ़कर सुनाने में वह लहज़ा काम नहीं करता जो कहानी कहने में काम करता है, जैसे हाथ-पैरों के माध्यम से चित्रात्मकता पैदा करना, चेहरे पर अलग-अलग तरह के भाव लेकर आना, पात्रानुकूल कहना आदि। यूँ तो पढ़ने में भी हाव-भाव बहुत ज़रूरी है, परन्तु कहने में तो हाव-भाव ही सब कुछ कह देता है। पढ़ना तो एक तकनीकी काम है जिसमें स्वाभाविकता उतनी दृष्टिगोचर नहीं होती जितनी कहानी कहने में होती है। यह विडंबना की बात है कि आजकल के तथाकथित पढ़े-लिखे कहानी सुनाने में असमर्थ पाए जाते हैं, जबकि जिनको हम अनपढ़ कहते हैं वे हज़ारों कहानी, किस्से याद किए हुए हैं तथा पूरे हाव भाव से सुनाते भी रहते हैं। अतः हमारे शिक्षकों को कहानी कहने की कला सीखना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि कहने का अनोखा लहज़ा यदि आपके पास है तो आपके विद्यार्थी आपकी ओर खीचें चले आएँगे। इसलिए एक शिक्षक के लिए दस से बीस बाल कहानियाँ कंठस्थ होना अनिवार्य होना चाहिए।

## परिवेश से जुड़ी शब्दावली:

कहानी सुनाते समय वक्ता को यह ध्यान जरूर रखना चाहिए कि वह कहानी किसको सुना रहा है तथा उनके परिवेश में किस प्रकार की शब्दावली की अधिकता है। कहानी सुनाने से पहले उनकी शब्दावली का अध्ययन अवश्य कर लेना चाहिए। मान लीजिए एक बच्चे के परिवेश में ताँगा, बैल, लोहा, जंजीर, पिंजरा आदि शब्द नहीं हैं तो वह बालक कहानी से जुड़ नहीं पाएगा। इन शब्दों की जगह यदि ऊँट, टेकड़ी, घरघुल्ला आदि परिवेशीय शब्दों का प्रयोग करेंगे तो बच्चे रूचि लेकर कहानी सुनेंगे।